मिर्गी पागलपन नहीं

डॉ. नरेश पुरोहित

शारीरिक या मानसिक सक्रियता सुनिश्चित करने की गुरुतर जिम्मेवारी सिर के पिछले हिस्से में स्थित लगभग आधे किलोग्राम वज़न वाला हमारा मस्तिष्क बखूबी निभाता है। लेकिन कभी-कभी अपने सहज, सामान्य क्रियाकलापों से अलग यह मस्तिष्क कुपित भी हो जाता है और उसका कोप मिर्गी के दौरे के रूप में प्रकट होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व की कुल जनसंख्या के 5-10 प्रतिशत हिस्से को जीवन में एक बार मिर्गी का दौरा पड़ सकता है। किन्तु मात्र एक बार दौरा पड़ने पर उस व्यक्ति विशेष को मिर्गी का रोगी घोषित नहीं किया जा सकता। दुनिया भर में तकरीबन 5 करोड़ लोग और भारत में लगभग एक करोड़ लोग मिर्गी के शिकार हैं। 75 प्रतिशत रोगियों को तो इसका दौरा स्कूल के दिनों में ही पड़ चुका होता है।

दरअसल हमारा मस्तिष्क लगभग 3 खरब तंत्रिका कोशिकाओं से बना है। इन्हीं की क्रियाशीलता से हमारे सभी ऐच्छिक एवं अनैच्छिक कार्य नियंत्रित होते हैं। मस्तिष्क के सभी कोशों में एक विद्युतीय प्रवाह होता है। मस्तिष्क ठीक से काम करे इसके लिए सभी कोश विद्युतीय नाड़ियों के ज़रिए एक दूसरे से सम्पर्क बनाए रखते हैं। जब कभी मस्तिष्क में असामान्य और अस्वाभाविक रूप से ज़्यादा बिजली का संचार होने लगता है तो व्यक्ति विशेष को झटके लगने लगते हैं। इसे ही मिर्गी कहते हैं। ऐसे में बेहोशी अधिकतम 4-5 मिनट तक रहती है और बेहोशी से बाहर आते ही व्यक्ति एक सामान्य मनुष्य जैसा हो जाता है।

लेकिन इस सब के बावजूद इस रोग को पागलपन और मानसिक बीमारी मानने वालों की कमी नहीं है। मुंह से झाग निकलते और बेहोश होते समय शरीर की अकड़न तथा ऐंठन को देख लोग न जाने कितने वहम पाल लेते हैं। सच्चाई तो यह है कि यह एक तरह की मस्तिष्कीय विकृति है जिसका मानसिक बीमारी से कोई लेना-देना नहीं है।

एक रोगी द्वारा चित्रित दौरे की स्मृति। कई रोगियों को भावी दौरों के दृष्टिक पूर्वाभास होते हैं। ये अनुभव कुछ-कुछ सपनों जैसे होते हैं हालांकि व्यक्ति पूरी तरह से चेतन अवस्था में होता है।

मिर्गी के 10 फीसदी मामले अनुवांशिक होते हैं। यह रोग किसी को भी किसी भी आयुवर्ग में हो सकता है। कई बार गर्भवती स्त्री में पाइरीडॉक्सिन नामक विटामिन बी की कमी के कारण इसका बीज गर्भावस्था के दौरान ही पड़ जाता है और जन्म के एक महीने बाद बच्चे में मिर्गी प्रकट हो जाती है। शिशु जन्म के दौरान किसी तरह की असामान्यता जैसे बच्चे का देर से रोना या जन्म के समय योनि में बच्चे का फंस जाना आदि जटिलताएं आगे चलकर बच्चे में मिर्गी का कारण बन सकती हैं।

चूंकि पांच साल की उम्र तक बच्चे के मस्तिष्क का विकास होता रहता है अतः इस अवधि में मिर्गी के लक्षण भयंकर और तीव्र नहीं होते। इस उम्र में मिर्गी के दौरे के समय बच्चा हिलाने-डुलाने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं करता या लेटे हुए ही साइकिल चलाने जैसी हरकतें करने लगता है। वह एक जगह देखता रह सकता है या आंखें असामान्य ढंग से झपकाने अथवा झटके देकर हाथ या कंधे उचकाने जैसे शारीरिक हरकतें कर सकता है।

इस मस्तिष्कीय विकार के और भी कई कारण हो सकते हैं। अत्यधिक शराब पीना, बहुत अधिक टेलीविज़न देखना, दिमागी बुखार, मेनिनजाइटिस, क्षय रोग, बहुत तेज़ ज्वर, ब्रेन ट्यूमर, मस्तिष्क में गम्भीर चोट या किसी तरह का संक्रमण भी